



8

मैं और मेरा देश



महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे। एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले। उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी। उन्होंने स्टेशन पर फलों की खोज की, किंतु पा न सके। उनके मुँह से अचानक निकला – “जापान में शायद फल नहीं मिलते!”

एक जापानी युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था। उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह भागा और कहीं से एक टोकरी ताजे फल ले आया। उसने वे फल स्वामी रामतीर्थ को भेंट किए और कहा, “लीजिए, आपको फलों की जरूरत थी।”



स्वामी जी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है। उन्होंने उससे फलों के दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इनकार कर दिया। बहुत

आग्रह करने पर उसने कहा, “आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में फल नहीं मिलते।” स्वामी जी युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए। उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव न जाने कितना बढ़ा दिया।

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगाया जा सकता है। किसी देश का एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से कोई पुस्तक पढ़ने के लिए लाया। इस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। इन चित्रों को उस युवक ने पुस्तक में से निकाल लिया और पुस्तक वापस कर दी। किसी जापानी विद्यार्थी ने उसे देख लिया और पुस्तकालय प्रभारी को इसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।



अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए, पर मामला यहीं नहीं रुका और उस पुस्तकालय बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि पुस्तकालय में इस विद्यार्थी का प्रवेश तो वर्जित है ही, समस्त देश के निवासियों का भी प्रवेश वर्जित है।

जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं दूसरे युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो न जाने कि कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लॉछित करता रहा।

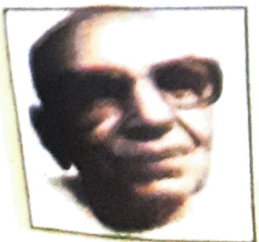
जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं तो हमारे माथे पर ही कलंक का टीका लगता, बल्कि देश का भी सिर नीचा होता है और उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। जब हम कोई श्रेष्ठ कार्य करते हैं तो उससे हमारा ही सिर नहीं ऊँचा होता, बल्कि देश का भी सिर ऊँचा होता और उसका गौरव बढ़ता है। इसलिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आए।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिर खानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और वह गड़बड़ है, यह परेशानी है। साथ ही, क्या आप अपने देश की तुलना किसी अन्य देश के साथ करते हैं कि कौन-सा देश श्रेष्ठ है और कौन-सा देश हीन है? यदि हाँ, तब आप को चिन्ता होगी कि देश की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? अपशब्दों का प्रयोग करते हैं? इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं? अपने घर, दफ्तर, गली को गंदा रखते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जहाँ भी जायें, कोनों में पीक थूकते हैं? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलम-ठेल करते हैं, निमंत्रण होने पर विलंब से पहुँचते हैं या वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह शिष्ट व्यवहार के विपरीत आचरण करते हैं?

यदि आपका उत्तर 'हाँ' है, तो आप के द्वारा देश के सम्मान को भयंकर आघात पहुँचा रहा है और राष्ट्रीय संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है। यदि आपका उत्तर 'नहीं' है, तो आपके द्वारा देश का सम्मान बढ़ेगा और संस्कृति भी सुरक्षित रहेगी।

— कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'



कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 को सहारनपुर जिले के देवबंद गाँव में हुआ। ये हिंदी के जाने माने निबंधकार थे। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - जिंदगी मुसकाई, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे। 9 मई 1995 को इनका निधन हो गया।





शब्दार्थ

आग्रह = अनुरोध

मुग्ध = मोहित

आघात = चोट

सुरक्षित = अच्छी तरह रक्षा किया हुआ

लौछित = कलंकित

संस्कृति = शुद्ध आचरण की परंपरा

गौरव = बड़प्पन

अपशब्द = गाली-गलौज

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए –

- (क) स्वामी राम तीर्थ को स्टेशन पर फलों की खोज क्यों करनी पड़ी ?
- (ख) जापानी युवक स्वामी जी के लिए फल क्यों ले आया ?
- (ग) स्वामी जी द्वारा फलों का मूल्य दिए जाने पर जापानी युवक ने क्या कहा ?
- (घ) युवक और उसके देशवासियों का पुस्तकालय में प्रवेश क्यों वर्जित कर दिया गया?

2. वाक्यों को पढ़िए और सोचकर लिखिए – अच्छी आदत/गलत आदत

- (क) केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकना।
- (ख) अपने घर का कूड़ा बाहर सड़क पर फेंकना।
- (ग) शौचालय का प्रयोग करना और साबुन से हाथ धोना।
- (घ) पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ना।
- (ङ) अपना घर, गली, स्कूल, बस, ट्रेन को गंदा करना।
- (च) पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना।
- (छ) यातायात के नियमों का पालन करना।
- (ज) उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में धक्का-मुक्की करना।
- (झ) अनावश्यक पानी न बहाना।
- (ञ) हर दिन समय से स्कूल आना।



3. सोच-विचार : बताइए -

- (क) आप अपने स्कूल / गाँव / मोहल्ले का नाम ऊँचा करने के लिए क्या-क्या करेंगे ?
 (ख) अपने विद्यालय को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए आप क्या-क्या करेंगे ?

4. भाषा के रंग

(क) वचन के अनुसार क्रिया का रूप बदलिए :

- | | |
|---------------------------------|--------------------------|
| ● पुलिस ने एक चित्र बरामद किया। | ● बालक ने एक खिलौना खरीद |
| पुलिस ने कई चित्र बरामद किए। | |
| ● बालिका ने एक पुस्तक खरीदी। | ● रमेश ने एक रोटी खाई। |
| | |

(ख) रेखा द्वारा विलोम शब्द को जोड़िए -

ताजा	सुलभ	श्रेष्ठ	स्वीकार करना
बढ़ा देना	पुरस्कार	सुरुचि	अरक्षित
दुर्लभ	बासी	सुरक्षित	हीन
दण्ड	घटा देना	अस्वीकार करना	कुरुचि

(ग) मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

सिर ऊँचा करना	=	सम्मान बढ़ाना
कलंक का टीका लगाना	=	बदनामी कराना
प्रतिष्ठा पर आँच आना	=	सम्मान घटना
इधर की उधर लगाना	=	एक से दूसरे की शिकायत करना

(घ) अंग्रेजी भाषा के बहुत से शब्द हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। पाठ में आए ऐसे अंग्रेजी शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए, जैसे - रेल।

5. तुम्हारी कलम से -

इस पाठ को पढ़ने के बाद बनी समझ को अपने शब्दों में लिखिए।



6. अब करने की बारी —

(क) महापुरुषों के जीवन की प्रेरक घटनाओं के बारे में पढ़िए।

(ख) स्वयं की एवं आस-पास की सफाई के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ? सूची बनाइए।

(ग) देश-प्रेम की घटनाओं से जुड़े अन्य प्रसंग अपने शिक्षक से सुनिए।

7. मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए —

1.

2.

8. इस पाठ से —

(क) मैंने सीखा —

(ख) मैं करूँगी/करूँगा —

मैं हिंद का हूँ, हिंद मेरा है — प्यारा वतन। वतन के लिए प्यार ही मेरा ईमान है। मैं एक ईमानदार वतनपरस्त रहकर हिंद की मिट्टी में मिल जाना चाहता हूँ।”

— अमीर खुसरो (प्रसिद्ध सूफी संत और कवि)

यह भी जानिए—

स्वच्छ भारत अभियान

भारत के प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन 02 अक्टूबर 2014 को ‘स्वच्छ भारत अभियान’ की शुरुआत की। स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना प्रत्येक व्यक्ति तक शौचालयों, ठोस और तरल कचरा निपटारा प्रणालियों सहित स्वच्छता सुविधाओं की पहुँच का मार्ग प्रशस्त करने, ग्राम स्वच्छता और सुरक्षित तथा पर्याप्त पेयजल आपूर्ति करने के लिए की गई।

